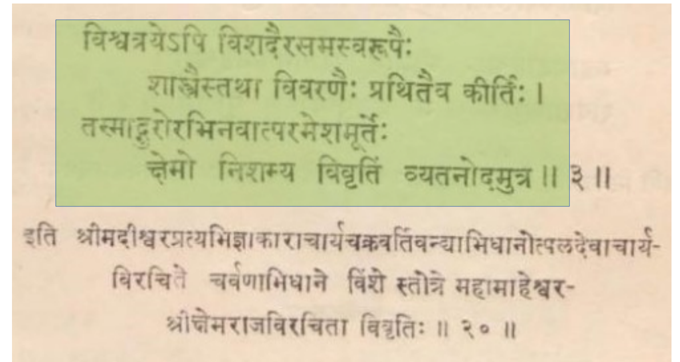
June 26 _Kupwara 43256.pdf

**Title : Utpala Stotravali**

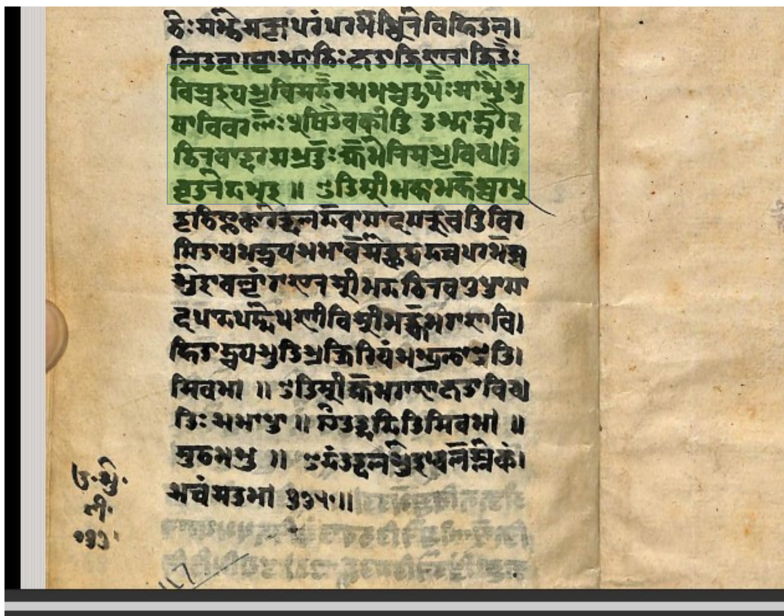




विश्वत्रयेऽपि विशदैरसमस्वरूपैः
शास्त्रैस्तथा विवरणैः प्रथितैव कीर्तिः ।
तस्माद्गुरोरभिनवात्परमेशमूर्तेः
क्षेमो निशम्य विवृतिं व्यतनोदमुत्र ॥ ३ ॥

इति श्रीमदीश्वरप्रत्यभिज्ञाकाराचार्यचक्रवर्तिवन्द्याभिधानोत्पलदेवाचार्य-
विरचिते चर्वणाभिधाने विंशे स्तोत्रे महामाहेश्वर-
श्रीक्षेमराजविरचिता विवृतिः ॥ २० ॥

Ref:https://archive.org/details/ShivaStotravaliRajanakLakshman/page/n369/mode/2up



Utpala Stotravali With Kshemaraja Tika Sharada Ram Shaiv Ashram Manuscript 5
by eGangotri

Ref:https://archive.org/details/UtpalaStotravaliWithKshemarajaTikaSharadaRamShaivAshramManuscript5/page/n257/mode/2up

उत्पल

उ. मु.
टी.
१

उ. मु.
टी.
७

याय सिद्धाय भाज्यकपालिने नित्यं कपालयुक्ताय
स्त्रीसंश्रितविश्वरूपिणे नमः ॥००॥ भायविनेवि
श्रुतयशुद्धयपुकृष्टाने प्रज्ञायविश्वरूपायनमस्त्रि
दयमभवे ॥ दैवेन्द्र भद्रेडः श्रीयुक्तमहेश्वराय यशः
श्रिभमसिद्धपद्मत्रिसुतः भायवीर्यं लीमकरविश्व
मुक्तिविशिष्टभः नवभद्रइ गुरुः भवश्रीगीमाः
पुकटः पुक मध्यनश्वाश्वरूपः प्रज्ञोपायसिद्धिशुद्ध
लक्षः विश्वरूपः श्रीयुक्तकुलीयविश्वाकारः स्तुत्यनव
सिद्धिविसिद्धशुद्धरूपम् ॥०१॥ वज्रेन्द्रविभूतिवृक्ष
लगाङ्कनाकेलय शुद्धरकालीयाय नमस्तुभवम
उ. भु.
रूपं ॥ वज्रेन्द्रविभूतिः भभूतिषिशुद्धिशिखकारः क
टी.
षभपितिवजिष्ठहृदित्रिचक्रं भपत्रं लगाङ्कश्रुभव्हि:
००
भद्रदभालश्रुभंगरः श्रीकभाइयश स्तुत्यनवश्रुद
कालीयः भववमत्रिवज्रामीनभपिकृष्णहृदसीयम

श्व

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ इति श्री [illegible]
[illegible] ॥ इति
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] नमः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] नमः ॥ १३ ॥
[illegible]
[illegible] नमः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] नमः ॥ १४ ॥ [illegible]
[illegible] नमः ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उ. मृ.
टी.
०२

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

उ. भु.
टी.
०५

यत्रिऽस्मागह्नुहूम्भाभुस्मागऽंविठै धंभाग्लवा
वैधयेधंस्त्रीक्रुभजभरः ॥ स्मागहनुहूंशिवमभा
वैमपाइहन्न स्मागऽंविठैऽवमभाभुस्मायत्रि य
धंभंभारभभूहूपवैधडतिग्रुतिध्यैरैपिमिक्रुपऽय
ह्लूऽपरभाक्तुःभत्री क्रीक्रुभजभरःकल्पः यषैत्रंभ
ह्नैःडतिवयह्लूभंविडिःक्रीक्रुहुत्रपिलंस्मागऽ भप
स्त्रिडि ॥ ०७ त्रुभऽंऽवमहूनिम्हत्रीदठवहू
धाभी ह्मेवपुकटीह्नयडहन्नैवलह्लूऽ ॥ भुहूनि
मैहूनिभुलिभामिधुऽत्र ठवह्लूधंभडऽभभावैम
पुषभारहमृक्तपाऽभ भुऽपवहमेव ऽत्रीयत्रर
विरहभुकटीह्नयडहन्नैवकमभिह्मभाविधुःपु
ऽत्रीयत्रयऽल्लह्लूऽ ऽऽद ह्लिपुपीयत्रू यत्रमैहूत्रा
धंठवत्रैवत्रश्रि ॥ ०१ ॥ भधांत्रश्रिऽइपिस्पैधकै
भिम्रऽमैहाः ऽहुत्रस्मापडहव्रभालयभिमभित्र

मृ॰ टी॰ ०७

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कृष्णं कंवपुर्धेनविदितं किंतत्र पूर्ववितुविदितम्।
तन्मे वद भगवन् गलितं भीमन् पूर्वं विदितंपि विदुरः॥
देवं भगवन्तमितं पूर्वं विदितं विदुरंपि भूतपरं पदम्
पुरुषमनन्तं परिलयं स्वयं विदितं विभुः यस्य
त्रिभुवनविदितं पूर्वविदितम् इदं तत्वं पुरुषं वपुर्धर्म
पावनविदितं पुरुषमनन्तं वपुरुषं नन्दनं यस्य
भ। यस्मान्भवभयं लीवते इति तत्वं वदेन्न
मम वरं संस्कृतं इदम् ॥ १ ॥ पादपङ्कज
रजं तत्कमिह पदं धितं विभुपदः कमलं।
विरमयत्विदं महत्तत्वं वपुरुषयमम् ॥
तत्वं तत्वयाभगीमिह यमयमनं कमलम्
कमिह भुवि मनपदं मनगतं तदपि गत
महत्तत्वं जीवपूयायविः भूतं पयभूतभूय।
तः भूपु नतमनुस्मरणयति कमिहः पारम

[margin, rotated:] श्रीमद्भगवद्गीता सी. ११ शि.

उ. मु.
टी.
९-३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उ. भु. टी. १५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ल्पा मन्त्रमयीम् [illegible] ॥१॥

तदाक्रम्य बलं मन्त्राः सर्वज्ञबलशालिनः । प्रवर्तन्तेऽधिकाराय करणानीव देहिनः ॥ [illegible]

[illegible] ॥५॥ तत्रैव संप्रलीयन्ते शान्तरूपा निरञ्जनाः । सहाराधकचित्तेन तेनैते शिवधर्मिणः ॥ [illegible]

[illegible] ॥७॥ विलीयमानासु [illegible] ॥ [illegible] विलीयन्ते [illegible]

१ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उ॰ भु॰

टी॰

१७

उ.
मे. सी.
७१

[illegible]

[illegible]

०१।

उ.मु.
टी.
१५

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उ. भु.
टी.
५१

॥ १०

१० ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ११

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १२

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

उ. भु.
ली.
७५

रैवतः सत्कृत्य भूविस्थं स्रवश्रियं सर्वत्र सुपादिशुभा ॥ ००
चन्द्रसूर्यमयस्य मन्दं मेरोर्गृह्य पितृस्य मध्ये प्रयागस्य कलः मक
लेषु तत्त्वेषु पीयूषकं ॥ चन्द्रसूर्यमये यत्र मन्दं मेरुय
रेखेतः मेरोर्गच्छन् सुपितृतीर्थं प्रभूभि मकलेतिवर्मे
मः सर्वे तिरवर्तिः कलः प्रयाणितिडयदक्ष्येनवद्रग ०२
चन्द्रसूर्यमयस्य मेरोर्गलयमध्ये विश्वे विवदस्य मध्ये
तं मदय चलस्य मम ॥ यावत्सूर्यश्चन्द्रसूर्यमयस्य मे
रोर्मयापापतः सर्वतः सदृशिकायः समदयालतमेव
चस्य ॥ सहृदमस्माद्यतः चलेतद्यमदश्चलनु ॥ ०३ ॥
लगत्रिलयमस्य मेरोः कामतिहरं द्वन्द्वं मन्त्रं
तमहतः मीयमवद ॥ सगते विश्व विलयेतमं
ऽ. मु. हरिलयेयः मृगमयस्य वामस्य तिहरे पतिप्रल
ली. दममहेदमेव मन्त्रं तं विश्वहं पक्षं मदन्तं सम
७८ मामीयमयामा ॥ ०१ ॥ समेमयामतागत्रिविस्तु
दमालं मद्यं मतेति विहितं कर्तैः स्वाहा प्रजवितीत्व ॥
तवप्रजवितीं कर्तैः स्वाहा मन्त्रमाणं तं मतेति विहिते

[illegible]
[illegible] ।। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।। ७१ ।। [illegible]
[illegible] ।।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।।
[illegible]
[illegible] ।। [illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] १२१
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उ. श्री. टी. ५७

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥१००

उ.
गु. टी.
७५

मं. टी.
७६